दिलसोज़ अलफ़ाज़

ऋचा दीक्षित

दिलसोज़ अलफ़ाज़

ऋचा दीक्षित

Cover Page Art By R. K. Verma

MOPH

मैं उन सभी लोगों का आभार प्रकट करती हूँ, जिन्होंने हमेशा मेरे काम को सराहा है, और प्रोत्साहित किया है।

मैं बहुत शुक्रगुज़ार हूँ ईरम फ़ातिमा 'आशी' की जिन्होंने इस क़िताब के संशोधन और संपादन में मेरी सहायता की और कुमार विक्रांत की जिन्होंने इस क़िताब का चित्रांकन करने में मुझे सहायता की। मैं राज कुमार वर्मा को भी धन्यवाद करती हूँ जिन्होंने इस क़िताब के प्रमुख पृष्ठ के लिए अपनी खूबसूरत पेंटिंग प्रदान की.

मैं शुक्रगुज़ार हूँ, अपने परिवार जनो, अपने तमाम दोस्तों की जिन्होंने हमेशा मुझे प्रोत्साहित किया।

आप सभी के हौंसले और प्रोत्साहन के बिना ये क़िताब "दिलसोज़ अलफ़ाज़" कभी न अपने आगाज़ और अंजाम को आ पाती।

धन्यवाद,

ऋचा दीक्षित

शाएरा ऋचा की दिलकश ग़ज़ले, खुबसूरत लफ़्ज़ो से बुनी हुई हैं जो जज़्बातों से सराबोर हैं।
मुहब्बत के मज़मून पर लिखी हुई ये वो दिलचस्प शायरी हैं जो हर ख़ासोआम को अंदर तक छू कर - रूहानी अहसास कराती हैं।
यू तो ये कह पाना मेरे लिए बहुत मुश्किल है के कौन सी ग़ज़ल ज़्यादा पंसद आई, फिर भी जो मेरे दिल के क़रीब हैं, मैं उन का ज़िक्र करना चाहुगी वो है -'गुमनाम', 'ज़िंदगी', 'कुछ यू ही जाना है', 'मका़म'....
मेरी दुआ है कि इन ग़ज़लों की झंकार हर पढ़ने वाले के दिल में सद्दयों तक गूँजती रहे और शएरा ऋचा को ख़ूब कामयाबी मिले।

दिली दुआएँ
ईरम फ़ातिमा 'आशी'

(प्रबंध सम्पादिका रिफ्लेक्शन)

खुद को पाने और खोने की दास्तान-ए-ज़िन्दगी में, प्यार , मोहोब्बत, गम, ख़ुशी, हार, जीत, शिकायतें, रूसवाइयां, तमाम एहसास दिल की देहलीज़ पर अपने-अपने हिस्से का सावन, बरसा के गुज़र जाते हैं, और तसव्वुर को चंद खामोश अलफ़ाज़ से रह जाते हैं.

कुछ ऐसे ही एहसास और अलफ़ाज़ समेटे आपकी नज़र हैं ये चंद “दिलसोज़ अलफ़ाज़”.

“मैं कोई कवि या शायर होने की दावेदार नहीं, बस कुछ ख्यालों और एहसासों को शब्दों के सहारे बुनने की कोशिश की है .इन रचनाओं में कोई भी कमी या भूल लगे तो उसे मेरी अबोध गलती मानकर माफ़ करें.

ऋचा दीक्षित

अलविदा

मुझसे यूँ नज़र न फेर,

के फिर नज़र न आऊँ तुझे,

मुझसे यूँ न टूट,

के फिर सँवर न पाऊँ मैं……

बेगुनाह इस दिल पे इलज़ाम न कर,

वर्क-ए-जिंद पर मेरी, अपना किस्सा बेनाम न कर,

रहने दे कोई चाहत उम्मीद के हवाले,

यूँ लाकर बीच राह, गुमराह न कर………

आखरी कोई पैगाम नहीं न सही,

एहसान ये निबाह,

के, अलविदा न कर ......
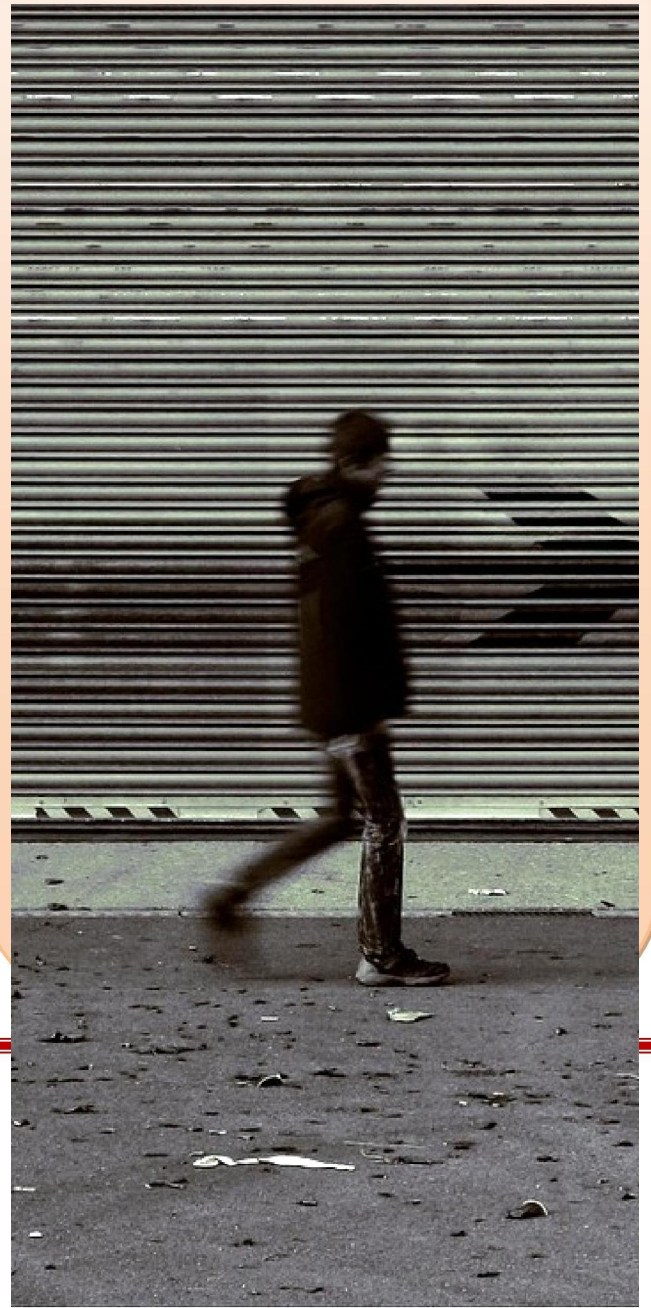
बारिशें !

खोली जो बंद खिड़कियाँ, बारिशों को धरती के
आँचल को भिगोते देखा,

सौंधी सी खुशबुएँ बिखरी हुई सी हवाओं में
मिलीं,

लगा जैसे गीली सी इस ज़मीन ने ओढ़ ली हो
चादर सुकूँ की,

बारिशों के पानी में अटखेलियाँ करते बचपन को
देखा,

धुला-धुला हर तरफ का ये ठहरा हुआ समां,

लग रहा था बनके मेहमां उतर आया हो स्वर्ग
धरा पे यहाँ,

हर मन को भिगोती , कभी तेज़ कभी धीमी ये
बारिशें,

लगा मानो संग अपने बहा के ले जा रही हों
मेरा हर गम, हर दर्द,

धुला - धुला , सौमिल सा मन को मेरे छू कर गया
एक मासूम सा एहसास देखा,

खिले फूलों को मुझे देखकर मुस्कुराते,

भीगे हर ज़र्रे को खुदके होने का नाज़ करते देखा,

ख़ुद के जहाँ से निकलकर, आज, उस, ख़ुदा
के जहाँ में आकर देखा,

ख्वाइशों के परिंदों को उड़ानों के लिए तैयार
होते देखा,

ठहाकों की गूँज नहीं थी कोई, बस,

मन के बंद दरवाज़ों से हो कर आज़ाद,

सुकूँ भरी मुस्कुराहटों को खुद में घुलते देखा,

चंद बूंदों ने बाँट दी ज़िन्दगी एक पल में,

ऐ गुज़रते हुए बादल तेरी बारिशों का शुक्रिया
………..!!!!

ऐ दिल

ऐ दिल ले चल कहीं जगह ऐसी,
जहाँ न कोई हमज़ाद हो, न कोई आईना टूटा भी,
न कोई मेरा हाल पूछे,
न कोई मेरी मौत पे सवाल पूछे,

... मैं हारा हुआ हूँ ज़माने की गैरत का, रस्मों का, रिवाज़ों का,
मुझे कहीं नज़र बंद करादे,

किसी के ज़िक्र में आऊँ न,
किसी के फ़िक्र में आऊँ न,
न किसी को मेरा ख्याल -ओ -ख़्वाब सूझे,

रास्तों पे धूल के बादल सा उड़ता रहा हूँ,
ज़माने की निगाह में खटकता रहा हूँ,
न अब कोई मेरा अता पूछे – न अब कोई मेरा पता पूछे ...

ऐ दिल ले चल कहीं जगह ऐसी, न हो जहाँ कोई आईना टूटा भी !!!!!!!!!!!
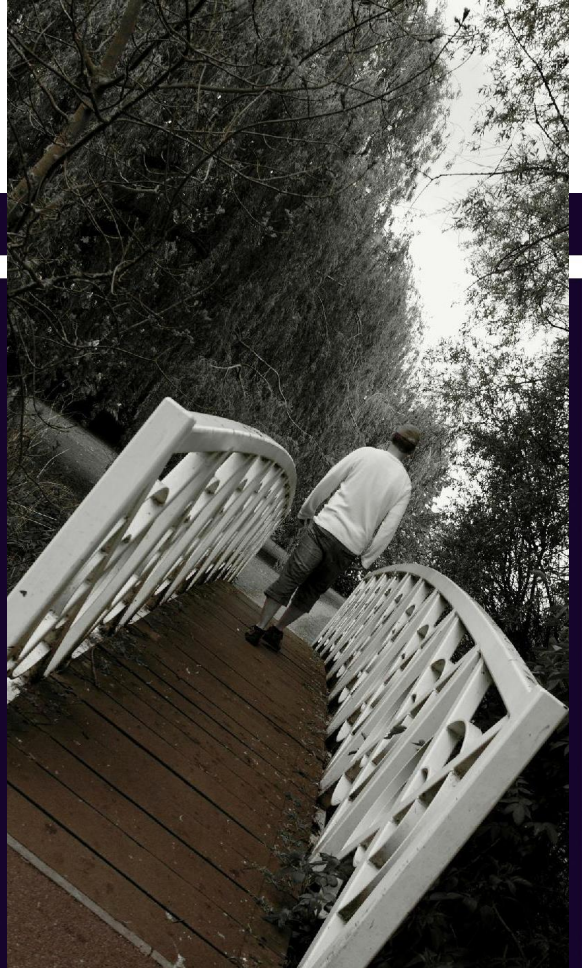
हमराह

पलकों का दामन छोड़ कर,

बह चला अश्क -ए -हुजूम फिर,

टूटा तारा कोई वो बरस पिछले,

याद आया बड़ा कहीं फिर ……

बीती बातों का यूँ तो अफ़सोस कुछ लाज़मी नहीं,

दिल-ए-बेगुनाह पर कोई इलज़ाम नहीं,

होते क्यूँ यूँ हालात हैं अक्सर,

वो माफ़ भी है मगर,

हमराह होने को साथ नहीं फिर …………

~~ख़त तेरे~~

बंद लिफाफों में रखे वो ख़त तेरे,

आज भी तेरे होने की सौंधी सी महक रखते हैं,

यूँ तो पढ़ता हूँ रोज़ाना इन्हें,

फिर भी हर रोज़ पढ़ते हुए कुछ नए से लगते हैं

कोरे कागज़ पे उकेरे हुए ये शब्द तेरी लिखावट में,

इठला के मुझसे आज भी अटखेलियाँ तमाम करते हैं,

दोहराता हूँ खुदसे इन्हें रोज़ाना यूँ तो,

फिर भी हर रोज़ दोहराने को कुछ नए से लगते हैं......

दूर आसमा में बनके सितारा कोई ताकता तू मुझे ज़रूर होगा,

तेरे खतों को पढ़ते हुए मेरी पलकों पे ठहरे ये आँसू देखता तो ज़रूर होगा....

हरिक अल्फाज़ में खनक तेरी आवाज़ की मेरे ज़हन में उठती है,

सुनता हूँ खनक ये रोज़ाना यूँ तो,

फिर भी हर रोज़ ये तेरी आहटें कुछ नई लगती है,

ख़त में लिखे जो एहसास ये हैं,

ज़माने गुज़र गए लिखे इन्हें,

फिर भी तेरी यादों से बेपर्दा करते मुझे ये आज भी हैं,

इन्हें महसूस करता हूँ रोज़ाना यूँ तो, फिर भी हर रोज़,

गीली सुबह की ओस सी भिगोती मेरे तन -मन को रोज़ाना ये आज भी हैं........

~~कुछ यूँ ही जाना है~~

दिल हार जाता हूँ, हर बार ज़िन्दगी से,

उधड़ कर, संवर जाता हूँ,

बहक कर, संभल जाता हूँ,

वक़्त की शर्त पे,

आज़माइश पे गुज़र जाता हूँ,

ज़िन्दगी की लत का कायल हूँ,

इसकी बेरुखी पे भी,

इंतज़ार से पेश आता हूँ,

और, ये समझते हैं,

मेरा कायदा कुछ बेमाना है,

फितूर है, बहाना है ....

बताऊँ कैसे इन्हें ...

मैंने ज़िन्दगी को,

कुछ यूँ ही जाना है,

~~ मैं ...!! ~~

टूट के ग़म की बाज़ुओं में बिखरता हूँ मैं,

ज़िन्दगी से किये वादे के लिए, फिर खुद को बुनता हूँ मैं,

कई दफ़ा अकेला हूँ चलता,

कई दफ़ा भीड़ में भीड़ होता हूँ मैं,

मेरा ख़ुदा जाने, याँ मैं जानूँ,

मुकद्दमा-ए-ज़िन्दगी की तारीख़ पे,

कैसे कभी गुनहगार, तो कभी बेगुनाह पेश होता हूँ मैं,

आदत नहीं अपनी, अपनी वफ़ा सुनाने की,

आदत नहीं अपनी, बेवफाओं पे खता बिठाने की,

हैरत-ए -ज़िन्दगी से हैरान भी होता हूँ मैं,

ज़िन्दगी से किये वादे के लिए, फिर खुद को बुनता हूँ मैं,

कई दफ़ा खामोश होता हूँ,

कई दफ़ा तनहा रहता हूँ मैं,

मेरा ख़ुदा जाने, याँ मैं जानूँ,

हर एक वस्ल-ए-जिन्द की तारिख पे,

कैसे कभी बेअलफाज़, तो कभी बेआवाज़ होता हूँ मैं ....!

के,

टूट के ग़म की बाज़ुओं में बिखरता हूँ मैं,

ज़िन्दगी से किये वादे के लिए, फिर खुद को बुनता हूँ मैं,

ज़ाहिर सा एक ख़ास-ओ-आम हूँ मैं,

ज़िन्दगी की महफ़िल में शायर बदनाम हूँ मैं ....!

मैं शाख़ से टूटा हुआ पत्ता एक........

मैं शाख़ से टूटा हुआ पत्ता एक
वक़्त की लहरों के संग बहता रहा,
मंजिलें मिलती रहीं,
बदलती रहीं,
खोती रहीं !
... कभी किनारों पे ठहरा,
कभी लहरों में उलझा,
कभी बहता रहा अकेला यूँही,
कभी उल्फ़त ने घेरा मुझे,
कभी रोका रास्तों में चट्टानों ने मुझे ,,,,,
तो , कभी लहरों के पहलू में सिमट कर,
और गहरा, और गहरा, और गहरा बहता रहा यूँही,

मैं शाख़ से टूटा हुआ पत्ता एक ,,,,,!

मक़ाम

मुझसे होकर गुज़रने वाले, क्यूँ मैं तेरा मक़ाम नहीं,

लड़खड़ा जाये ज़बान जिस अलफ़ाज़ को दो हराते हुए,

क्यूँ दिल कि किसी ऐसी साज़िश का मैं राज़ नहीं …….

ख्यालों कि उल्फत से फुर्सत हो जो क भी,

मेरा माजरा भी सुलझा ज़रा ....

ये होश मेरे कि खामोशियाँ,

ये बेहोशी के जवाब -तलब ....

क्यूँ जो ये सब सित म है,

और तुम कहते हो अक्सर, 'कोई बात नहीं ……………

सोने के पालनों में पलने वाले ......

सोने के पालनों में पलने वाले,

मुक्कदर के सिकंदर क्या होंगे,

मिट्टी में उगा करते हैं ठोस फलधर,

तदबीर ओढ़ने वालों को तकदीर के पहरे क्या होंगे .....

मुट्ठी भर ज़िन्दगी को कायदे में उतारने वाले,

बेकायदा अलमस्त फकीरों की शोहरत समझते क्या होंगे ....

ईमारत -ए -जिस्म की शान -ओ -शौकत में गुज़र करते हैं जो,

बंद कोठरी में बसते उस शेहेंशा की सौबत समझते क्या होंगे ……………

खुदा को ज़ात समझने वाले,

उसके महबूब क्या होंगे,

फ़क्त बात इतनी ही है,

अपनी मुस्कुराहट को मौहताज रखते हैं जो,

किसी और की मुस्कुराहट की वजह क्या होंगे ………

चंद अशआर

सुकूँ नाम का वहम है महज़ दिल बहलाने को

ज़िन्दगी रास आती है झगड़ कर खुदको आज़माने को. ...

बेकार है दिल लगाने का रिवाज़ भी यारों,

अक्सर छोड़ जाते हैं हमकदम ही तनहा उम्र फरमाने को. ...

कभी वक़्त -बेवक़्त की तनहाइयाँ मिलीं,

कभी किसी के सलूख की बेपरवाहियाँ मिलीं,

किसीकी अधूरी आरज़ू में ज़िन्दगी गुज़ार चले !

तमाम कोशिशें भी आरज़ू पे वार चले,

फिर भी रुस्वाइयाँ मिलीं !

खुदा की मर्ज़ी थी शायद,

तभी,

न आरज़ू मिली ,,,,,,,,,,, न ज़िन्दगी मिली

हर वो शख्स शायर है जिसने गम देखा है,

किसी ने कम तो किसी ने बेशुमार देखा है,

जिसे लफ्ज़ मिले वो कागज़ कलम के नाम कर गया,

जिसे न मिले वो गुमनाम युहीं अश्कों में,

... बसर कर गया !

तन्हा ....!

गीली बारिशों में भी सूखा सा,

किनारों पे डूबा –डूबा सा,

पानी में रहा हूँ जलता आतिश सा, मैं,

गैर हुआ ! रुसवा हुआ ! खुद से,

तेरे इश्क की सदा यूँ सजा हुई,

रह गया !

बह गया !

मिट गया ! मैं

कतरा –कतरा रूह सिमट के फ़नाह
हुई,

तमाम हुआ ! रद्दी हुआ ! खुद में,

इन खामोशियों का हासिल भी ख़ामोशी मिली,

दुनिया की भीड़ में भी रहा तन्हा,

तेरे इश्क की सदा यूँ सजा हुई !

मेरे अक्स को भी पी गए ये अँधेरे,

कतरा - कतरा रूह सिमट के यूँ फ़नाह
हुई,

दफ़न रहा ! लापता रहा ! खुद में,

गुज़रते रहे काफ़िले,

बनते –बिगड़ते रहे ज़िन्दगी के सिलसिले,

हाँ मैं मगर रहा बे-सुध,

रहा तन्हा.................

~~दो बातें ~~

ज़िन्दगी लाई हर बार दो बातें,

कौनसी मयसर को आज़माऊँ,

एक रख लूँ हथेली पे जो,

दूसरी में फिर सब हारा ही पाऊँ .....

असमंजस के सिरे थाम कर मंज़िल को कैसे जाऊँ,

ठूँठ सा खड़ा हर बार, क्या हासिल को बतलाऊँ ....

~~इश्क़~~

इश्क़ वही गाया जाता है,

जिसको रब्ब की अरदास सा फ़रमाया जाता है,

गुनगुनाने को तो हैं बहुत नगमें–नज़्म -कलाम,

मेहबूब वही मनाया जाता है,

जिसमें मंज़िल-ए-मौत को ज़िन्दगी सा पाया जाता है......

~~ खरीद - फ़रोख्त ~~

सामने होकर भी वो जायज़ नहीं होता,

इल्म-ए-वफ़ा का दस्तूर अब लाज़मी नहीं होता.....

रख्खा है क्या यूँ इल्ज़ामों कि खरीद - फ़रोख्त में आखिर,

किस्मत से ज़यादा, किस्मत से कम कुछ भी नहीं होता ....
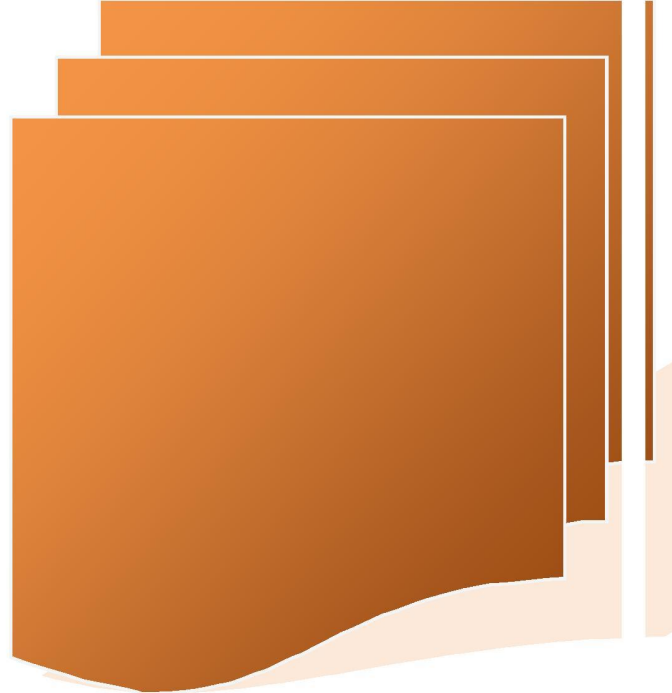
तेरा वहम

हवाओं में बहती ये सादगी,
ये इन बादलों का छाता गहरा काला तिलिस्म,
रूह नम कर गया .....
उस पर ये तेरा वहम,

दिल के शहर भर में चर्चा है अब,
नकाबपोश कोई हयात -ए-बेमकसद को मकसद थमा गया ....

वजूद

ज़िन्दगी को मेरी इससे बेहतर क्या ख़्याल होगा,
मेरे हर ज़िक्र में तेरा नाम होगा,

तू अँधेरा ही सही मेरा,
आखिर वजूद मेरे का हर साया आकर तुझ में ही गुम होगा .....

आहट

अहद - ए -वफ़ा भुला बैठे वो हुज़ूर,
नाम - ए -वफ़ा की बेकसी से हम भी तर थे,

फ़र्ज़ करने को यूँ भी न रह गया था,
के कभी आओगे किसी आहट पे तुम,

पास - ए - वफ़ा भुला बैठे थे वो हुज़ूर,
और एहल - ए - वफ़ा की बेरुखी से हम भी तर थे,

यूँ टूट कर कंकर - कंकर हुए थे,
के जुड़े जो कभी,
बिखरने के निशाँ बहुत थे ....

तू.....!!

कोई अनजानी तस्वीर नहीं,
जिंदा सा एहसास है तू,
है दूर मीलों मुझसे,
मगर मुझ में कहीं पास है तू,
नज़रों में दबी ये जो नमी सी है,
... तेरे होने की एक कमी सी है,
ज़रre - ज़रre में मेरी रूह के,
तेरा ज़िक्र मिलता है,
तू आज भी कहीं मुझ में सुकूँ
सा खिलता है ....
दफ़न पन्नों में ये जो दास्तानें सी है,
हैं गुज़रे हुए वक़्त के साये सिमटे,
फिर भी मेरे जीने के बहाने सी हैं,
यूँ तो ,,,,
रफ्तारों में कट रही ज़िन्दगी है अब,
वक़्त की लहरों का थमना हुआ है मुनासिब कब,
बहता दरिया सा है तू कोई,
बेआवाज़ बहता है मुझ में,
आज़ाद परिंदों सी शक्सियत लिए, कहता है मुझ में,
कोई भूला साज़ नहीं,
गुनगुनाहट भरी नज़्म है तू,
है दूर मीलों मुझसे,
मगर मुझ में कहीं पास है तू ....

रूबरू

नामुमकिन की हद पे मुमकिन मिला,

ज़िन्दगी कि सरहद पे अपना बेहद मिला,

लाइ तलब-ए -तफ्तीश मंज़र पे ऐसे,

पानी कि बस्ती में आखिर,

धुंधली नज़र को अपना आतिश मिला..........

भूला था मैं जो चहरा अपना बरसों कहीं,

तमाम -ओ -एतराज़ बुझा कर,

मुझसे फिर रूबरू हो मिला ....

साये

जला है कोई बहुत बारिशों में तर-बतर होते हुए,

गम -ए -उल्फ़त तले धुआँ है इस कदर,

के, आँखों कि लाली, अक्सर सुर्ख हो आती है,

ज़िक्र - ए-यार कहते हुए,

फ़र्ज़ करने को महज़ साये हैं रूह पर बिखरे,

और नुमाइश को बाकी हैं चंद अश्क वो,

देखा है जिन्हें कई बार, आकर चश्म-ए -महफ़िल तक,

'असर -बेअसर होते हुए'...... ....

बेनाम

अजीब यहाँ हालात मिलते हैं,

अक्सर दुश्मन अपने ही जज़्बात मिलते हैं,

हर बार ढूँढ लाता है दिल खुदगर्ज़ फ़साना कोई,

और वस्ल - ए -जिंद पर सब फिर भी बेनाम मिलते हैं,

'ज़िन्दगी को पहलु बेशुमार यहाँ…… '

ये सोचकर महफूज़ रखते हैं खुदको अक्सर,

के, हम जैसे और भी हैं तमाम यहाँ………

अक्सर

सख़्त लहज़े रहे ज़िन्दगी के बहुत,

बंजर हिस्से रहे ज़िन्दगी के बहुत,

वक़्त के हाथों बनी तस्वीर एसी … .

अपने ही चहरे को तरसते रहे बहुत,

गुज़रा आलम - ए -हसरत ऐसे,

अक्सर खुद को ही भूले रहे बहुत…….

दर- ए -यार से भी रफ़ा हुए,

अक्सर गम ये खुदको सुनाकर

कभी मुस्कुराए,

कभी रोया किये बहुत …………

ख्वाब

दिल को बेहद उलझा के देख लिया,

वादा-ए-फरामोश कि मज़ार पर

उम्मीद का आफ़ताब बला के देख लिया……..

लम्हों के तराज़ू में ख़ुद को जिस पर ज़िन्दगी सा वार आये ……..

मिट्टी के पुलिंदे सा वो नज़र का ख्वाब निकला,

ख़ाक -ओ-ख़ाक सब,

अश्क-ए-काफ़िर सा किस्सा निकला…………

तारुफ

ज़िन्दगी पे गुमशुदा गुज़रे ख़वाब कुछ,

मैं चलता ही रहा और पीछे छूटे ख्वाब कुछ,

बन सँवर कर आया जो आईने के रूबरू,

बदला था शख्सियत-ए-मज़लूम के दर पर बहुत कुछ,

रहे दो शख्स खड़े हूबहू,

पूछें ख़ुद से ख़ुद का ही तारुफ,

जवाब -ए-हासिल को ये रह गया,

के,

बहुत बदल गए तुम…….
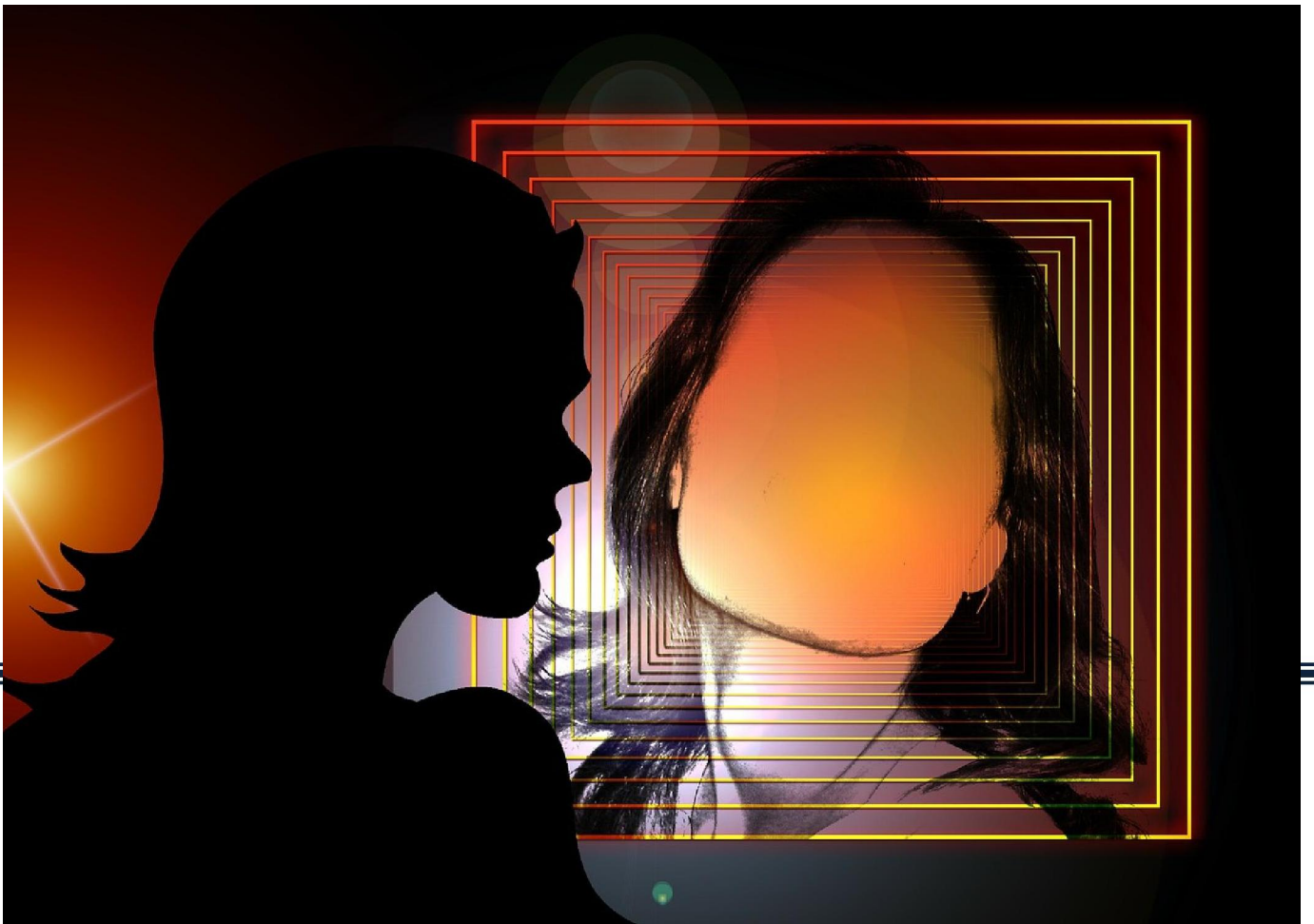
तनहा दिल

मेरे उलझे हुए पन्नों में ,

सुलझे हुए किस्से ढूंढते हो क्या,

हस्ती आँखों का राज़-ए-फ़साना अब क्या

मशहूर करें,

तनहा दिल में वजूद ढूंढते हो क्या,

हाल-ए -दिल को सब ख़ामोश हैं नज़ारे,

बयान-ए -दिल को अलफ़ाज़ ढूंढते हो क्या,

बिखरे हैं जो अश्क-ए -मोती यहाँ,

कीमतें अब इनकी तोलते हो क्या.....

ख़ामोश तरन्नुम

नम आँखों का, रात भर का फ़साना वो क्या समझेंगे,

जिन्हें अक्सर दिखता नहीं दिन के उजालों में भी,

बोलती नज़रों का ख़ामोश तरन्नुम वो क्या समझेंगे,

जिन्हें अक्सर आदत है नज़रें चुराकर बात कह जाने की.........

गिला क्या उनसे,

मिला क्या उनसे,

और चाहत -ए-सिला क्या उनसे,

जिन्हें लत है हर दफ़ा रुख बदल जाने की..........

मेरी बारी

खुदसे खुदकी यहाँ जंग जारी है,

हारने - जीतने के सिलसिले जारी है,

उसपर सूझते ज़िन्दगी को दाव -पेच ये सारे .....

होने दो सहर- ए-वस्ल भी अब तो,

'मगर इस बार मेरी बारी है...'

अक्सर

ज़िन्दगी से दिल्लगी में न जाने कितने ही फ़नाह होते रहे

पलकों में ठहरे अश्कों के मोती,

अक्सर ये कहकर मेरी आँखों से रफ़ा होते रहे......

गिला करने को यूँ तो कुछ होता नहीं,

अक्सर जो बीत जाता है हालात के दर से,

किस्मत में होता है,

या के होता नहीं...

किस्मत की तानाशाही

दिल तुझसे जोड़ के फिर तोड़ना है मुझे,
गली तेरी से गुज़र कर फिर रास्ता अपना मोड़ना है मुझे,
किस्मत की तानाशाही ये कैसी,
दिल अपना तोड़ के, तुझसे अलविदा होना है मुझे....

खाली आसमां

बादल बरस कर ये भी असीम नज़ारा दे गया,
खाली ज़मीन खाली आसमां दे गया,
बढ़ा के हाथ जो आपने अक्स तक मैं गया,
अँधेरा वो गली पिछली का, साये सब ख़ारिज कर गया ......

जज़्बात

ज़िन्दगी के तलफुज़ में आता है बार–बार तेरा नाम क्यूँ,

बात हुई जो ख़त्म तो फिर ये बात क्यूँ,

सलेट पर लिखकर मिटाए हुए अलफ़ाज़ सा तेरा फ़साना,

फिर ये उलझे हुए अक्सर मिलते हैं मेरे जज़्बात क्यूँ…

हैरां

दिल को अब राज़ नहीं होते,

तन्हाई से कहने को अलफ़ाज़ नहीं होते,

बेरोज़गार ही गुज़र जाते हैं तसव्वुर के रात और दिन,

आमदनी को नसीब ज़िन्दगी के चार सिक्के नहीं होते…………

'रुखसती का तमगा लिए लोग बदनाम नहीं होते,

और, इश्क़ कि बरकत को मोती नहीं होते………'

खैर अब इस बात पर हम भी हैरां नहीं होते…

~~ काफ़िला ~~

ज़िन्दगी का भी भरोसा न हमको रास आया,

आँख मूँद कर जब कभी ख़वाब सँभालने को हुए,

ज़िन्दगी को सूझ कोई न कोई मज़ाक आया,

तकदीर ने किये यूँ फैंसले हर बार,

के,

दूर तक चलते हुए भी,

मेरी आरज़ू का काफ़िला न मंज़िल को आया...

~~ सितारों कि चमक ~~

दुनिया कि नज़र में गिरा तो क्या फर्क मुझे,

बार – बार आज़माया गया तो भी क्या फर्क मुझे,

अभी ज़िंदा हूँ खुदसे ये कहकर,

कुछ देर जो ये गर्दिश तो गर्दिश सही,

'सितारों कि चमक कम होती नहीं ....'

एहसास

तस्वीरों के ज़रिये से रह गए,

दरमियाँ को लम्हें अजनबी से रह गए,

बहुत खामोश होते हैं अल्फाज़ मेरे अक्सर,

शोर करने को टूटे कुछ एहसास रह गए. ....

ख़ता किसके नाम आए अब,

किस्मतों के सौदे में,

कुछ गलत हम,

कुछ गलत तुम, रह गए ....

फ़साना

लाजवाब रहा ज़िन्दगी का फ़साना हम तक,

वस्ल - ए -इश्क़ पर कभी तुम न थे,

कभी हम न थे,

यूँही इंतज़ार को अपने तसल्ली देते रहे,

निग़ाह - ए -यार को कभी तुम न थे,

कभी हम न थे ....
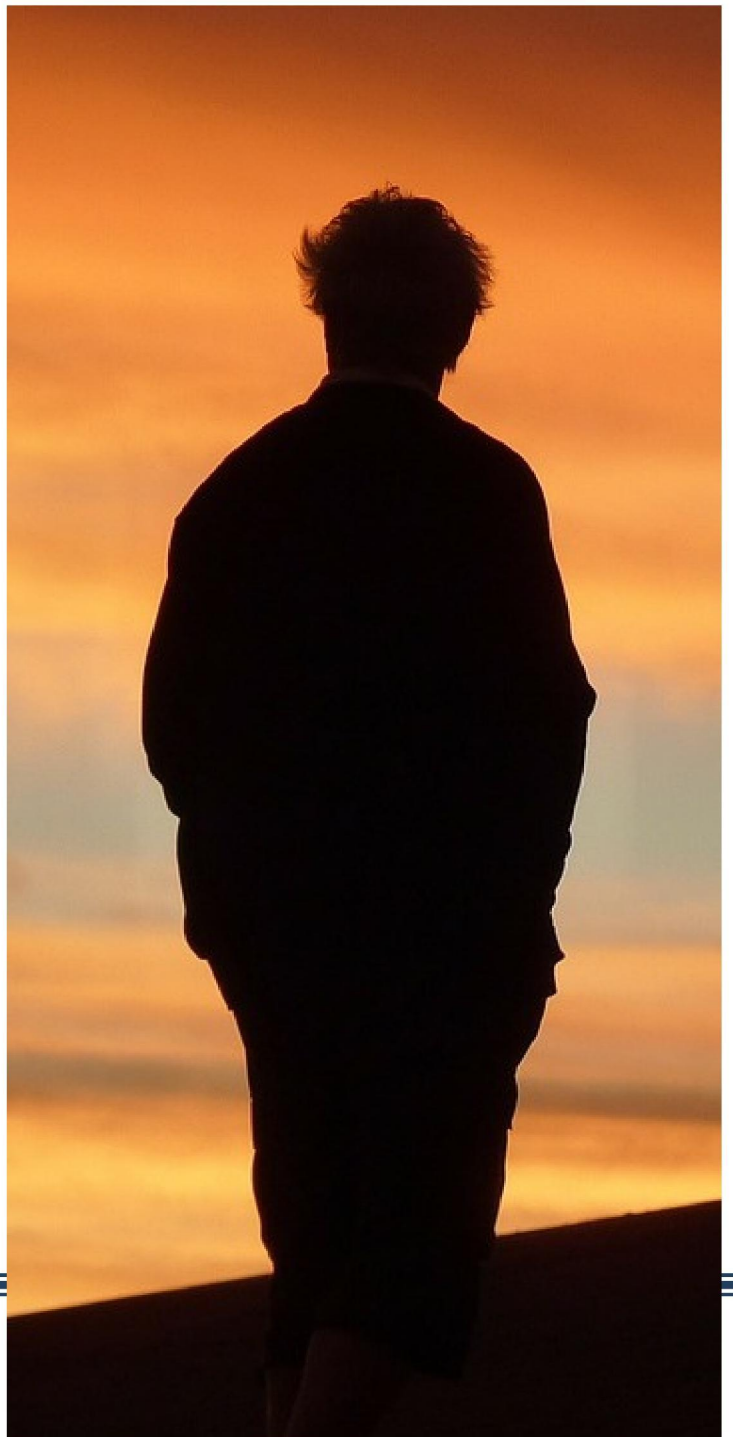
शाम-ए- ज़िन्दगी

अजीब हालात -ओ -हश्र ज़िन्दगी के रूबरू,

दिल पे गुज़रे जो सही, ज़माने पे गुज़रे वो गलत क्यूँ,

रोज़ाना का माजरा ये क्या है,

ज़िन्दगी पे वक़्त का बहाना ये क्या है,

शाम-ए- ज़िन्दगी पर परवाने हुए जाते हैं कितने,

और, ज़िन्दगी को मौत का बहाना ये क्या है....

कतरा भर

हूँ अगर मैं कतरा भर भी,
मुझे अपनी हैसियत पे नाज़ है,

ज़िन्दगी बहकाए,
बहलाए –फुसलाये कितना भी चाहे ……

खुदा के हुकुम में बहते हुए,
बस एक रोज़ समंदर होने की आस है …….

अकेले हम

वक़्त ने दिया बहुत कुछ,
वक़्त ने लिया बहुत कुछ,
पेश आए कितने अजनबी, अपने होकर,
पेश आए कितने अपने, अजनबी होकर,

तमन्नाओं के घरौंदों में,
चेहेकते हुए कई ख्वाबों के बेजान हुए जिस्म थे कभी,
कभी अपनी ही लाश का कांधा हुए,

ज़िन्दगी के बाज़ार में,
ख़ुशी के ठेले कम थे,
भर के थैला थे जो अगर,
खरीदने को बस गम थे,

अच्छा - बुरा परखते हुए,
जहाँ हम आकर ठहरे

बस अकेले हम थे,……………
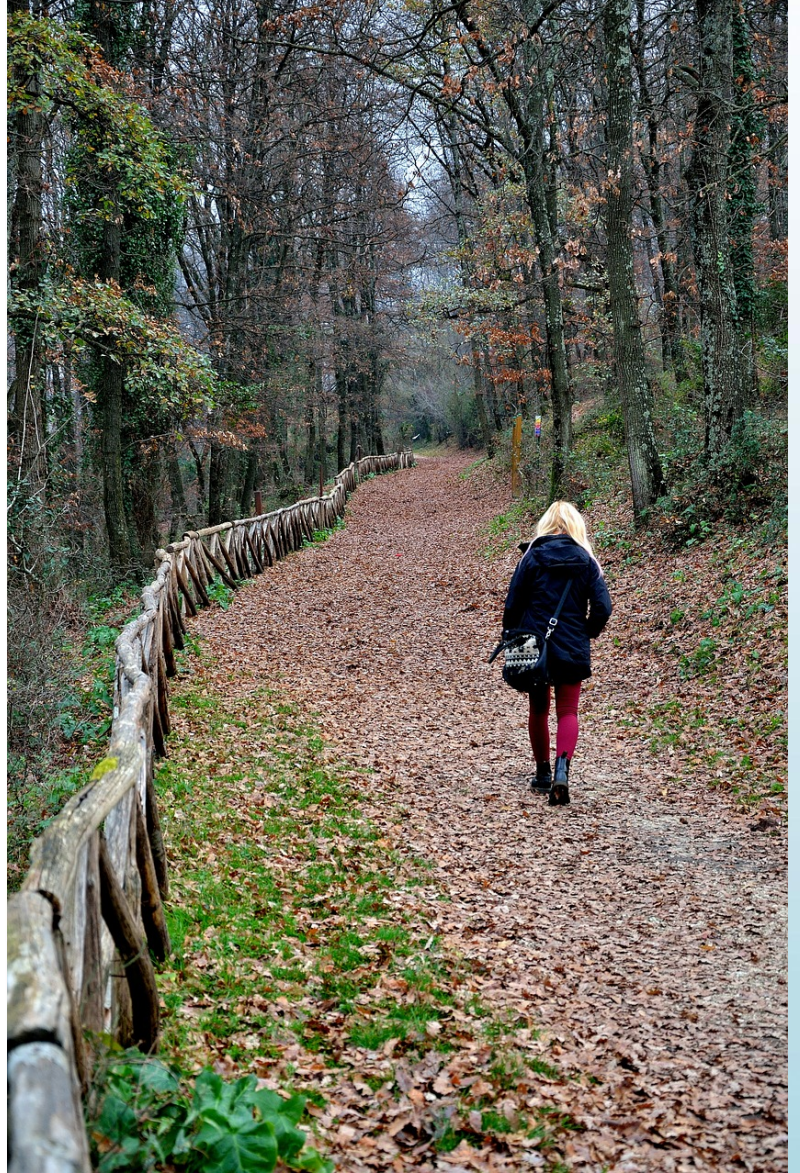
आज

तमाम उम्र के वादे पर,
तमाम -ओ -ख़ाक कर गया,
शख्स वो जाते –जाते,
आखरी अलविदा भी ले गया,
बुझा के पानी में चिंगारी सी कोई,
चिरागों से शमां ख़ाली कर गया ....

आज,
अफ़सोस खुद -ख़ुशी को किया हमने,
वरना !,
ज़ाहिर को सुनने रहा कौन था ....

गुमनाम

इंतजार की नज़र को कोई मंज़र हो,
बंद कमरे के चिरागों पे रौशनी का असर हो,
बहुत हो न हो,
थोडा ही कुछ ज़िन्दगी को रूमानी हो .....

आतिश -ए-बेघर को ठिकाना हो,
ज़िन्दगी को ज़िन्दगी का बहाना हो,

सफ़र -ए -हयात को मालूम तो हो, अपने होने की वजह,
चाहे फिर अंजाम पर,
गुमनाम हो सब,
या के फ़साना हो ....

तकलुफ्फ

ज़िन्दगी का काफिला अपने मंज़र पे आएगा इक रोज़,
गली भर की सहर का तुझे यूँ तकलुफ्फ क्यूँ है,
किस्सा तेरा है वो जो लिखा गया,
न कुछ ज़्यादा ही रहे, न कुछ काम ही पेश आया करे ......

खामोशियाँ

निग़ाह की तरस, दीदार -ए -यार है,
वो पढ़ले खामोशियाँ मेरी, तो क्या बात है ....

आये जो वो हुज़ूर होकर यहाँ,
ज़िन्दगी से कहो फिर क्या रंज -ओ -गुबार है ....

अजीब माहौल

बड़ी अजीब बात है,
हर शाम कट रही है,
किसीके इंतजार में,
बड़े अजीब हालात हैं,
मेरे कमरे का आईना भी मुझे कसता है
फबितियाँ तेरे नाम से,
बड़े अजीब गुज़रते मेरे दिन -रात हैं,
क्या मुझे मालूम तेरे दिल में क्या बात है,
मेरे जैसे ही क्या तेरे भी जज़्बात हैं,
बड़े अजीब सिलसिले बेहिसाब हैं,

न मैं संभल पाऊँ,

न कुछ समझ पाऊँ,
बड़े अजीब माहौल के मजाज़ हैं ....

ज़िन्दगी

मैं ज़िन्दगी पे ग़ुबार जताता रहा,
मिटता रहा , मिटाता रहा,
दिल्सोज़ मंज़र बदलते रहे,
और मैं टूटे पर लिए आसमां की शिद्दत करता रहा,
ज़िन्दगी की दखलंदाज़ी के चलते,
खुदसे ही खफ़ा होता रहा ....

अब जो ख़ुदसे रोज़ सुबह मिलने लगा हूँ,
तो यूँ सोचता हूँ,
नीली स्याही के पन्नों से जो समंदर समेटा है,
क्यूँ न उसकी मौज को कश्ती बनाया जाये,
किनारा हो न हो,
सफ़र को और बेहतर निभाया जाए ...!!,
ज़िन्दगी की दखलंदाज़ी पे,
मनमानी से गौर फ़रमाया जाये ...

क्यूँ मेरे गम पर भी पहरे किये हुए हो,
मेरे ज़िन्दा होने की कोई निशानी तो रहने दो,

रत्ती भर वजूद में लिपटे हुए गुज़र करते हैं,
जिस हाल में हैं उस हाल में ही रहने दो ....

बदगुमां

पाँव ज़मीं पर पड़ते नहीं मेरे आजकल,
इश्क ने मुझसे मेरी ज़मीन छीन ली ....

खुदसे बातें करते हुए गुज़र जाती है शाम गुलाबी,
इश्क ने मुझसे मेरी तन्हाई छीन ली ....

होश भी बदगुमां हुए जाते हैं,
इश्क ने मुझसे मेरी यूँ खुदी छीन ली ....,

आफ़त-ए-फ़िज़ूल

दिल के मर्ज़ की दवा करो कोई,
या कहो के इश्क जैसा होता कुछ नहीं,

फ़िज़ूल जवानी की बातों में आये,
लैला - मजनू के किस्से इसने मुझे बेकार ही थमाए,

आसन शर्तों में इश्क का शौक लगाया,
मुझे खिलौना करके बखूब आज़माया,

अच्छा भला था मैं भी आदमी काम का,
बैठे बिठाए आफ़त-ए-फ़िज़ूल ने मेरा काम ही मुकाया .....!!

मंज़िल-मंज़िल करते-करते खोया सफ़र का सब ऐश -ओ -आराम,
धूल ढ़ली जो सहाब -ए-तमन्ना से,
सब तस्वीर हुआ था हाल ....

इंतज़ार फाँकते हुए गुज़री उम्र-दराज़,
जिन्हें आना था, लौट आये नहीं,

एक ज़रा किसी आहट के दर से लौटा जो वक़्त,
लौटा वो भी खाली हाथ ....

ज़िन्दगी के तजुर्बे में खाली हाथ सब हैं,
चले जाते हैं किस मुक़म्मल को फिर ये कारवाँ जाने........

ढ़लती शाम

ज़िन्दगी के पहलू में बेग़रज़ क्या ढूँढें,
रहा सब कुछ, कभी ये मतलब - कभी वो मतलब,
ढ़लती शाम के नज़ारे पे जो ठहरे,
ज़हन में ख़ाक मिले, कभी ये मतलब - कभी वो मतलब ...

बारिश का मंज़र

अच्छा था दिल बदलने का हुनरमंद था वो,
मेरी तरह टूटी छत तले,
बारिश से बचने की नाकाम कोशिशें न करता होगा .....

ये जो रात गुज़रती है मेरी तरफ,
गुज़रती होगी उसकी तरफ भी यूँ तो,
फर्क इतना ही होता होगा,
कमसकम वो चैन से सोता होगा .....,
कभी - कभी अफ़सोस में आता है,
के,
काश हमको भी उन सा हुनर होता,
फिर न कोई टूटी छत,
न बारिश का मंज़र होता ....

किस्सा

ज़माने ढ़लेे यूँ तो बरबादियाँ हुए,
ज़ख्मों की तासीर दर्द्शुदा है अबतलक,
संगीन है सारा किस्सा,
माथे की सिलवटें ये कहती हैं बेधड़क,

वो तो अच्छा है जीना सीख लिया यूँ भी हमने,
वरना कौन जाने कैसे गुज़रती हमपर ये हरकत,

फ़र्ज़ करते हैं,
आइन्दा को ज़िन्दगी के झाँसों में न आयेंगे,
टूटा जो कोई पैमाना अबके,
दिल के महखाने में अगर ......

हम उसपे न रुठेंगे,
न मनाएंगे ......!

कहने के और, करने के और हैं लोग आजकल,
किस -किस को परखा जाए,
किस -किस को समझा जाए ....

बेईल्ज़ाम

वो बेईल्ज़ाम ही रहा,
गुनाह आये तो मेरे सर ही आये ...,

बे इतिफाकी का हाल देखो,

वो टूटा मुझसे यूँ तो,
मगर टुकड़े बिखरे, मेरे ही नज़र आये ....

आशियाँ

इक हक़ीकत पे टूटी, दिलकश एक ख्वाब की मौजूदगी,
कोई बताए कैसे के शोर किस कदर हुआ था,
बहुत देर तक तक़रीर हुई थी लकीरों से,
फिर जाके कहीं महसूस हुआ था,
के,
आशियाँ कोई, मकां हुआ था .....

रह गए थे अकेले मेरे अक्स के साए भी,
आइना कुछ इस कदर मुझसे रूबरू हुआ था ....

तकदीर

दिल की आदत है तू,
दिल की शिद्दत है तू,
ज़हन के हर ख़याल की,
फरमाइश तू,
मेरी रूह को तर - बतर करता सावन सा सुकूँ !
खुदा का इसमें कुछ तो इरादा होगा,
शायद तभी,
तुझे मेरी - मुझे तेरी तकदीर में बाँटा होगा !

सस्ती तन्हाई

इक खामखाँ के ख़्वाब से दिल की रज़ा कर बैठे,
क्या पता था, अपनी ही खिदमत में सज़ा कर बैठे,
सोज़ हर एहसास कर बैठे,
सस्ती तन्हाई,
और महंगा सुकून कर बैठे ......

तन्हा ज़ात

ज़िन्दगी के तजुर्बे में तुम भी खाली हाथ हो,
हम भी खाली हाथ हैं,
सब पाना ही सब खोना है यहाँ,
भीड़ में अब यहाँ तुम भी तन्हा ज़ात हो,
हम भी तन्हा ज़ात हैं ....

धुआँ – धुआँ

पिघलते मोम सा गर्म ये गम तेरा,
जला के खर्च करे जाता है मुझे ,
धुआँ – धुआँ सब एहसास -ओ -अरमां हैं.......

ज़हन में जज़्ब चेहेरा तेरा,
पास बुला कर,
दूर किये जाता है मुझे .....

मुद्दा -ए -गौर

टूटे साज़ पे गुनगुनाने की कोशिश में हूँ,
दिल के अँधेरे को आफ़ताब दिखाने की कोशिश में हूँ,
ज़िन्दगी पे एक और आज़माइश निभाने की कोशिश में हूँ,
मुद्दा -ए -गौर तलब लो ये भी ,
मुख़्तसर एक परवाज़ मानाने की कोशिश में हूँ …………

ज़िन्दगी

दिल की गवाही पे,
किये इश्क के गुनाह माफ़ कितने,

उसके हिस्से तो ज़िन्दगी आई,
मेरे हिस्से हाथ खाली बात आई ……

दिल -ए-बेसब्र

बारिशों का दौर है फिर,
कुछ उस अब्र को भी,
कुछ मेरे दिल -ए-बेसब्र को भी,

मौसम-ए-जिन्द का तकाज़ा है ये,
कुछ गम है उस अब्र को भी,
कुछ मेरे दिल -ए-बेसब्र को भी …………

दिल

अज़ीम–शेहेंशा है दिल भी,
बात अपनी मनवा ही लेता है,
हम सोचते रहते हैं ज़िन्दगी पे गौर फरमाने को,
और ये संजीदगी से उफ़ रखता है,
आशिकी मिजाज़ इसका,
दिल्लगी कलाम इसका,
अटखेली काम इसका,
भरी बस्ती में नाम खराब इसका,

किस्से मशहूर करता है,
यादों को अपना रक़ीब रखता है,

रास आये तो राधा –कृष्ण,
न आये तो फ़कीर -ए-ग़ालिब करता है ....

बेहिसाब

क्यूँ मैखानों में पैमाने छलकाया करते हो,
नशा तो ज़िन्दगी भी लुटाती है बेहिसाब,

कोई गम है गर तो बारिशों का इंतज़ार करो,
अक्सर चश्म -ए-अश्क का तमाशा बना लेती है दुनिया, 'बेहिसाब '.....

गरज परस्त है रौनक -ए-जहान सारा,
बेमतलब, बेहिसाबी इश्क को खुदा भी है मौहताज यहाँ .....

हादसे

हादसे अक्सर ही यहाँ हो जाते हैं,
अच्छे भले मुख़ातिब हुए,
अजनबी हो जाते हैं,
यकीं को भी यकीं नहीं होता कई -कई बार,
कैसे अक्सर ये हादसे हो जाते हैं ....

अपने दायरे

दौर गुज़र जाते हैं,
मगर दिल को अपनी ठहर मिटाने में वक़्त लगता है,
चहरे बदल जाते हैं,
मगर, दिल को अपना आईना बदलने में वक़्त लगता है,

ज़िन्दगी मायिने बदल लेती है अपने,
मगर, दिल को अपने दायरे समेटने में वक़्त लगता है ....

ख़लिश

बड़े नाज़ुक हैं हालात दिल के,
कोई ख़लिश है इसको शायद,
बात बात पे बेज़ार हो उठता है,
कोई कमी है इसको शायद,
टुकड़ों में तब्दील हुआ रक्खा है,
कोई गहरी चोट है इसको शायद,
महफ़िल के तिलिस्म को नज़रंदाज़ किए हुए है,
कोई अपना भुला बैठा है इसको शायद ....

गुम

नज़रों में भीड़ के नज़ारे ,
और देखने को तस्वीर के पहलु ख़ाली हैं,

अक्सर जो गुम होते हैं हम अपने ही वहम पर,
फ़र्ज़ करने को फिर, वहम ही वहम बाकी हैं …………

गम-ए -आब -शार से लबालब दिल का हर पुर्ज़ा,
आतिश कोई एहसास बुझा है धुआँ -धुआँ होकर …..

महरूम

टूटे हुए ख़्वाब के टुकड़े चुभते हैं बहुत,
शाखों से पत्ते झड़ते हैं बहुत,

दर -ओ -दीवार अब ख़ाली हैं अक्सर,
अक्स मेरे मुझसे महरूम मिलते हैं बहुत ......

एक मोड़

दिल का दर्द बताऐं कैसे ,

है जिसके नामका उसे सुनाऐं कैसे ,

किस्मत ने बाँटा है कुछ यूँ,

तुमको भी –हमको भी,

दूर होकर भी पास हों ,कहो अब ये एहसास जुटाऐं कैसे,

माना के तेरी मंज़िल और है – मेरी मंज़िल और है,

फिर ये जिस एक मोड़ पर तुम भी हो -हम भी,

उस एक मोड़ पे " अलविदा " निभाऐं कैसे …………….

नए तिलिस्म

साँझ के झरोखे से ताकती आने वाली सुबह,
सब गुज़री गुज़ार के, रुबाब -ए-रक्स लिए हो कोई आने वाली सुबह ……
कुछ तुम भुला दो, कुछ हम बिसार दें,
सब बिखरी सवाँर के, रहने दो ये नए तिलिस्म लिए, नई सुबह …..

फिर अजनबी होकर मिलो कहीं,
न फिर गिला ही कोई दरमियाँ को आये,
सब ज़िक्र -ए-फ़िराक़ करके ख़ाक,
ढूँढ लाओ मुनासिब अबके सुबह कोई ………….

सस्ता कारोबार

बड़ा नाज़ुक है रिश्ता मेरी आरज़ू का तेरी जुस्तजूं तक,
यूँ बर्बादियाँ न कर मेरे ऐतबार की,
के, आशिकी कोई सस्ता कारोबार नहीं,
आमदनी को इंतज़ार है हाफ़िज़, और खर्च करने को सब्र है बाकि ....

ज़िन्दगी बेतहाशा यूँ खुदगर्ज़ निकली, तमाशा करके हमें,
शोर -ओ -गुल करके हमें, बे -बात एहसान -ओ -तकल्लुफ निकली ....

देर आये- दुरुस्त आये

धीमी- धीमी साँसों में चलते हूए,
ज़िन्दगी अपना एहसास लाई,
बिना बारिश,
ख्वाइशों के छींटे लाई,
अब सफ़र को मंज़िलों के शौक होंगे,
किनारों से नज़र के फासले कम होंगे,
ज़िन्दगी के पहलु में मुनासिब कुछ अरमां होंगे,
रात के साये में भी ख्वाबों के जुगनू साथ होंगे,
सच है बात अब ये भी,
देर आये हो , दुरुस्त आये हो ....

अजीब दुनिया

दिल से अज़ीज़ टुकड़ों को टूटते देखा है,
ज़िन्दगी के नाम पर लोगों को शौक बदलते देखा है,

अजीब दुनिया है दिल की,
ख़फा रहकर भी ,
इसे टूटे हुए टुकड़ों को सहलाते देखा है ....

लिफाफे

ज़िन्दगी नामुनासिब है यूँ तो अपनी तरफ भी,
फिर भी महफ़िल से उफ़ बताते नहीं,
दरकिनार हूए रख्खे हैं ख़ुदसे,
अपनी तस्वीर से भी जान -पहचान जता पाते नहीं,

बेख़ुदी में वक़्त सफ़र करता है अपना,
कई – कई रोज़ तो खुदसे भी मिल पाते नहीं,

और तुम्हें मज़ाक लगता है मेरा ये कहना, के,
होते हैं कई लिफाफे,
जिनके ख़त ताउम्र, 'अपना ठिकाना ढूँढ पाते नहीं ....!'
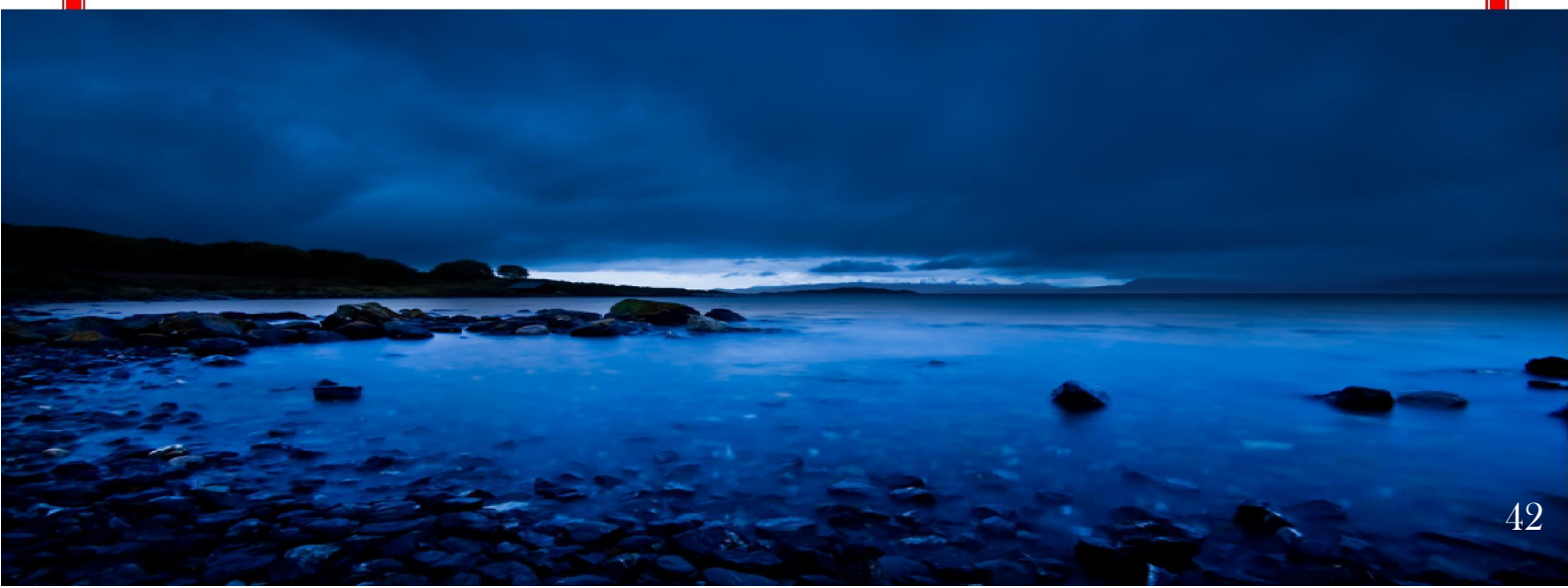
हालात

इश्क को सलीके हुए कब हैं,
दीवानों की हस्ती को सदके हुए कब हैं,

यूँ न रोया करो तन्हाई से गले लग -लग कर,
इश्क के रहते, दिल के हालात बेहतर हुए कब हैं ....

इश्क में सस्ती नहीं मौज इतनी,
जल कर भी परवाने को शमां नसीब कब है ....

खामोश

दिल की आरज़ू में रख्खे हुए तेरे गुमशुदा ख़याल पे,
कुछ यूँ तसव्वुर ने सवाल उठाया,
सब खामोश ही सूझा,
मैं कुछ कह भी न पाया,

और फिर दर्द ने अश्कों का लिबास बनाया,
कुछ यूँ मुझे इश्क रास आया ....

रेत सी जागीरें

दिल की बेज़ारी भी क्या है,
ख्वाइशों की खुमारी भी क्या है,
मौत के बहाने पे ज़िन्दगी भी क्या है,
गुमां करने को कोई यहाँ आरज़ू भी क्या है...
रेत सी जागीरें हैं ,
वक़्त की खींची कितनी ही लकीरें हैं,
ये एहतराम-ए-ज़िन्दगी भी गज़ब सितम है,
तौफीक में इसकी जिए जो मर जाये,
जो न जिए तो किधर जाये.........

नीले समंदर

ज़िन्दगी के ख्वाब से,
पुछा सवाल जो ये,
के बता तेरी हकीकत के निशाँ क्या हैं ?
ये पलकों पे ठहरे नीले समंदर,
याँ के पल भर के फलसफे सी मुहब्बत,
टूटी है जब-जब किसी ख्वाब से नींद जो,
अक्सर मिला हूँ मैं खुदसे बेखबर,
रोज़ाना के ये आरज़ू के मसले,
जवाब आये है अक्सर अब......,
चलो छोड़ो जाने भी दो,
ज़िन्दगी है, कुछ देर और आज़माने भी दो........

गुनेहगार

न तू गुनेहगार, न हम बदकिस्मत,
फ़क्त बात इतनी........
के,
न तू मेरी क़िस्मत, न हम तेरी क़िस्मत............

मुरीद

वो जिस्म लिए फिरते हैं,
और दिल रखते नहीं.........

अपनी मुहब्बत के मुरीद सीए रखते हैं,

और मुहब्बत किसी से करते नहीं..........

रेत का मंज़र

है कहाँ ज़िन्दगी को आराम,
ये धूप का गाँव,
जलती रेत का मंज़र,
अगर -मगर में उलझा रूह का पिंजर .....
बहकी हवाओं के बहाने से बहता वक़्त,
रंज -ओ -गम की सियाही में डूबे हालत कई,

उस पर ये कागज़ के लोग,
और चश्म -ए -काफ़िर को सूझता बारिश का पानी ....
***

इश्क की बेहाली में कितने ही नीलाम हूए,
फिर भी इश्क की दुकां पर भीड़ ही भीड़ मिलती रही ....
***

बेजां

कब ऐसा सोचा था के,
बेजां होगा इतना,
जिस्म में जान का होना,
बेईतिफाक ही मेरा किसी इतिफ़ाक में होना ....
सुबह से , गुज़रते हूए दिन तक का होना,
और मेरा वहीं–कहीं होकर भी न होना ....

सरबोशी

तू सुबह के ख़्वाब में आया कर,
तुझे हक़ीकत बनाना चाहता हूँ,
मेरी रूह पे अपने अक्स बिखरने दे,
तुझे वजूद बनाना चाहता हूँ,
बे इन्तिहा हुई जाती है इश्क की सरबोशी,
तुझे अपनी सूरत का आईना बनाना चाहता हूँ
....

फ़ुर्सत का चलन हो तेरी तरफ जो कभी,
तेरी मसरूफियत में ढ़लना चाहता हूँ ......

महताब

तेरी याद-ए-बशर मुझे महफिलों से ख़ारिज कर लाई,
दौर टूटा ख़ुदी का, बेख़ुदी पे लाई,
निगाह–ए-इंतजार को क्या बहाना बताऊँ,
माहौल की फरमाइश तेरी गुंजाइश लाई .... !

तेरी याद को महताब करके,
रात गुज़ारते हैं आये .....,
गिरफ़्तार किया इसने तो मुझे बिन बताए ....,

ख़ुदा करे तू भी किसी रोज़ यूँही मेरे ख़याल से गुज़रे,
और वक़्त फिर अपने मिलने की कोई साजिश लाए ....

आतिश -ए-मगरूर

इश्क तले दिल की गुज़र क्या समझे कोई !

किसीका बिखरना हर शाम ढले,
किसीका ख़ामोशी की गिरफ़्त में बसना,
कभी नज़रों में वो सावन का बरसने को तरसना, ...
इश्क तले दिल की जद्दो -जहद क्या समझे कोई,
आतिश -ए-मगरूर ये ....

न जीने ही दे,

न मरने ही दे ..... !!!
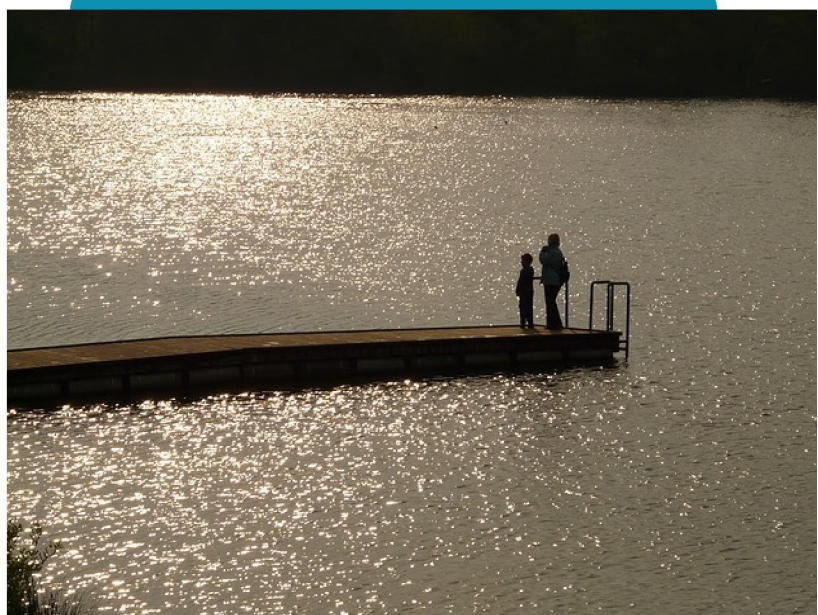
सौ दर्द

लाजवाब हूँ ज़िन्दगी तेरे ख़याल पे,
तेरे सच के आईने में,
सौ दर्द भी,
सौ हमदर्द भी,
सौ सवाल, सौ रंज, सौ रवायतें भी,
सब थाम के चलता रहा,
सफ़र के तौर पर सफ़र करता रहा ....
बेमतलब की कहानी सी में,
अपना किरदार ढूँढता रहा .....
ज़िन्दगी समझ कर मानो किसी ख्वाब पर,
लुटता रहा - मरता रहा,

ज़िन्दगी को पास लाने के शौक में,
क्या मालूम था !,
मौत के दर तक,
अपना ही बोझ ढ़ोता रहा ....

तू ख़्वाब भी नहीं ,हक़ीकत भी नहीं
तू अल्फाज़ भी नहीं, कोई साज़ भी नहीं,
कोई आगाज़ भी नहीं, कोई अंजाम भी नहीं,
एहसास सुकूँ सा तू, चंद लफ़्ज़ों में बयाँ भी नहीं ....
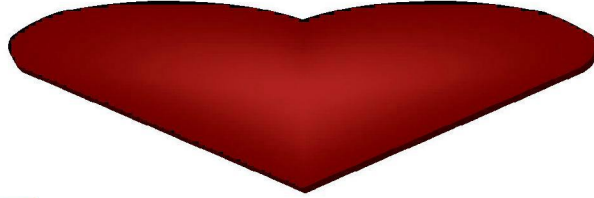
आतिश -ए- कमाल

उसकी गली को घर कर बैठे,
राह के पत्थर को मजनू हो बैठे,
बेक़सूर इश्क की हाँ पर,
ज़माने से रंज जुटा बैठे ....

और अफ़वाह ये उड़ाई उसने,
के,
किसी आतिश -ए- कमाल को,
बारिशों के ख़्वाब हो बैठे ....

पलकों तले

हसरतें तमाम करे,
जीने के लिए रोज़ -रोज़ मरे,
काफ़िर नासमझ न समझे,
बेहोशी में यूँ जीने में बात कहाँ !

होश भर ! ज़रा शाम होने से पहले,
न हो की ज़िन्दगी गुज़र जाये पलकों तले,
और, तू आहटें सुन भी न सके !!!

वारदात

दिल को आदत ये क्या हुई,
एक ही ख़याल पे सुबह से शाम हुई, किस्सा
वक़्त बेवक़्त हो के रह गया,
ज़िन्दगी आलम से आला हुई ....
दिल -ए -मुफ्लिज़ को खनक के वास्ते हुए,
मुहब्बत के नाम पर कैसी ये वारदात हुई ...

अच्छा भला चलता था काम,
ज़िन्दगी पे दो गिले बघार कर,
बेवजह ज़िन्दगी की आदत ही ख़राब हुई,
होश -ओ -हवाज़ से पूछो,
कैसी बेहोशी उनके साथ हुई,

ज़िन्दगी आलम से आला हुई ....
मुहब्बत के नाम पर कैसी ये वारदात हुई ....!

किस्सा

तस्वीरों से रंग उड़ा के,
लकीरों से अपने निशां मिटा के,
अब पूछते क्या हो यूँ हाल मेरा,
ये अपना सा कुछ होने का मिजाज़ है,
याँ अजनबी होने का लिहाज़ तेरा,

किस्सा सा समेट,
मकां खली तो कर गए,

अब दर -ओ -दिवार पे क्या है, यूँ,
अपने नाम का अलफ़ाज़ टटोलना तेरा ....
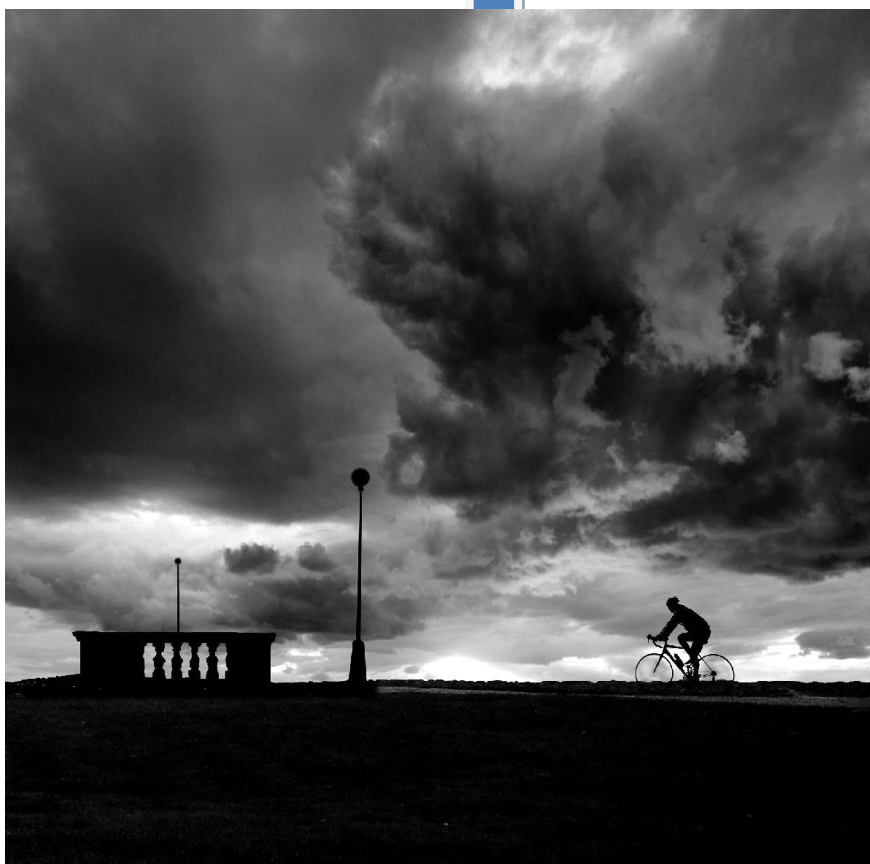
दिलदरियाँ

मसरूफ़ रहता हूँ अपनी ही तन्हाई में,
महफ़िल को कहो बाकि अब तारुफ़ ही क्या है,
ज़िन्दगी की सहूलियत पे चंद हूँ,
आरज़ू की नवाज़िश को कहो बाकि क्या है....

यारिआं, दिलदरियाँ बेमानी सी रूह कर गईं,
ज़हन में तफ्तीश को कहो बाकि क्या है ....

आरज़ू

मुहब्बत बेशक ही भटकी हुई आरज़ू का फ़साना है,
लाज़मी महफ़िल में फिर भी ये बहाना है,
ये वो आतिश,
के लगाये न लगे, बुझाए न बुझे ....

वीराना

सालों का तकलुफ़्फ़ निकला वो याराना,
बेखबर बड़ी दूर तक आए हमकदम समझते हुए,
टूटे जो फिर उस ख़्वाब से,
मीलों था पसरा वीराना ....

अपने ही टुकड़े समेटने को बाकि रहा,
ज़िन्दगी पे बतौर अफ़सोस गुज़रा वो नज़राना .....

रूह-ए-रक्स

दिल की आदत ये क्या होगई,
तुझ पे हक़ बताने लगा है,
बैठे-बैठे गुनगुनाने लगा है,
ख्वाबों में मुस्कुराने लगा है,
ज़िन्दगी से आवारा पेश आने लगा है,
बेहदगी को गले से लगाये,
खुदसे बेहतर पेश आने लगा है,
किसी गुमशुदा ख़याल पे,
रूह-ए-रक्स मनाने लगा है,
दुनिया के सब रिवाज़ भुलाने लगा है,
अपने ही आप से बहाने बनाने लगा है,

है तो मेरा ही हिस्सा,
मगर मुझसे ही अजनबी पेश आने लगा है ....

बेवजह की मशहूरियो से,
अच्छी हैं ये बदनामियाँ मुझे,

कमसकम आईने में चेहरा अपना साफ़ नज़र कर पाते तो हैं ....
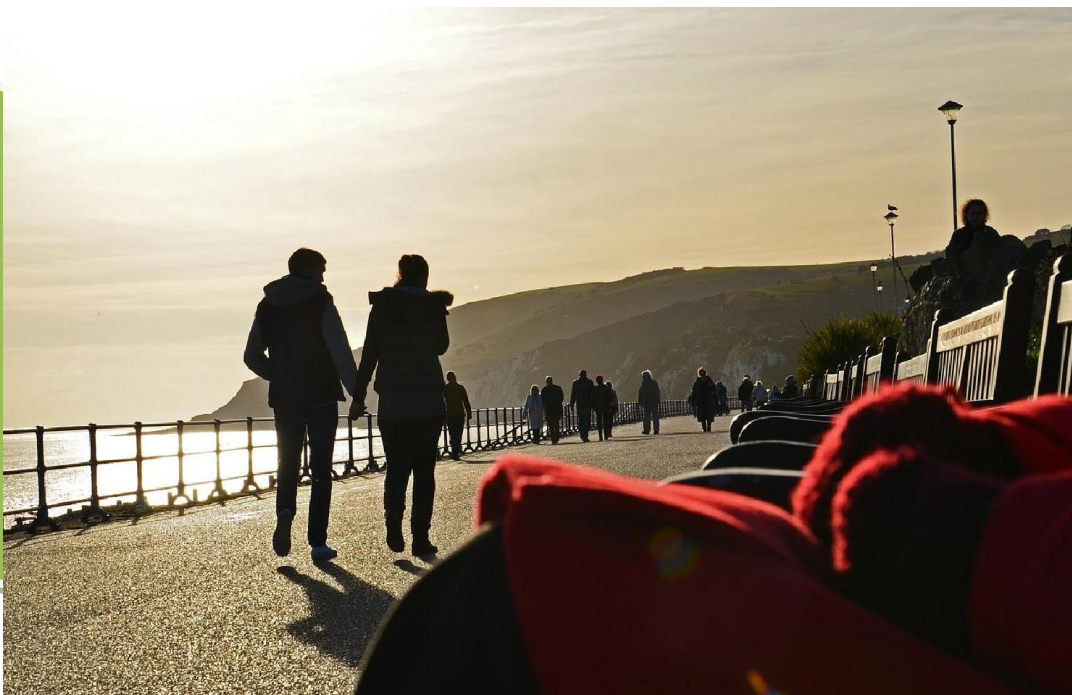
वफ़ा -ए- यारीआं

धागों की डोर कच्ची थी वो दरमियाँ,
न काफ़ी गुजरीं मसला -ए-इश्क पे सब मेरी वफ़ा -ए- यारीआं,

लफ़्ज़ों से परे का सब सच तो वो समझा नहीं,
नज़रों की नम बोलियाँ सुन सका नहीं,

फ़र्ज़ करके ये अंदाज़े ले गया,
के,
खुशफ़हमी को दूरियों के सिवा अब रहा कुछ नहीं ....

हाथ खाली

ज़िन्दगी भर कोरे कागज़ को रंगते रहे,
स्याही के छींटों से चेहरा अपना उभारते रहे,

उम्र बिताई इतनी बात समझने को,
के बंद मुट्ठी में, हाथ खाली, ही चलते रहे ....

दिल -ओ -जाना

तेरी आदत मेरे रोज़ाना से नही जाती,
सूरत कोई और दिल -ओ -जाना नहीं हो पाती,

फलसफा बाकि है ये अपनी तरफ अब ...

मौत से हालात होते हैं अक्सर,
फ़कत बस मौत ही नहीं आती ....
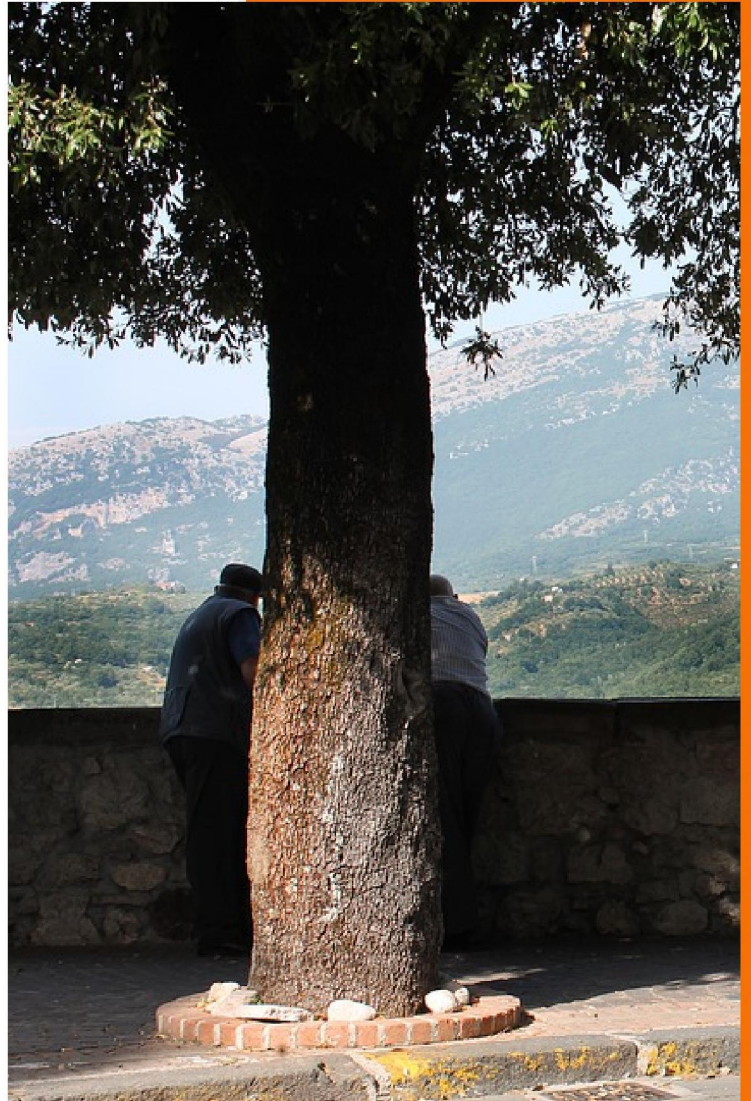
कतरा भर

हूँ अगर मैं कतरा भर भी,
मुझे अपनी हैसियत पे नाज़ है,

ज़िन्दगी बहकाए,
बहलाए –फुसलाये कितना भी चाहे ......

बस एक रोज़ समंदर होने की आस है ....
खुदा के हुकुम में बहते हुए,

अकेले हम

वक़्त ने दिया बहुत कुछ,
वक़्त ने लिया बहुत कुछ,
पेश आए कितने अजनबी, अपने होकर,
पेश आए कितने अपने, अजनबी होकर,

तमन्नाओं के घरौंदों में,
चेहेकते हुए कई ख्वाबों के बेजान हुए जिस्म थे कभी,
कभी अपनी ही लाश का कांधा हुए,

ज़िन्दगी के बाज़ार में,
ख़ुशी के ठेले कम थे,
भर के थैला थे जो अगर,
खरीदने को बस गम थे,

अच्छा - बुरा परखते हुए,
जहाँ हम आकर ठहरे,
बस अकेले हम थे ....
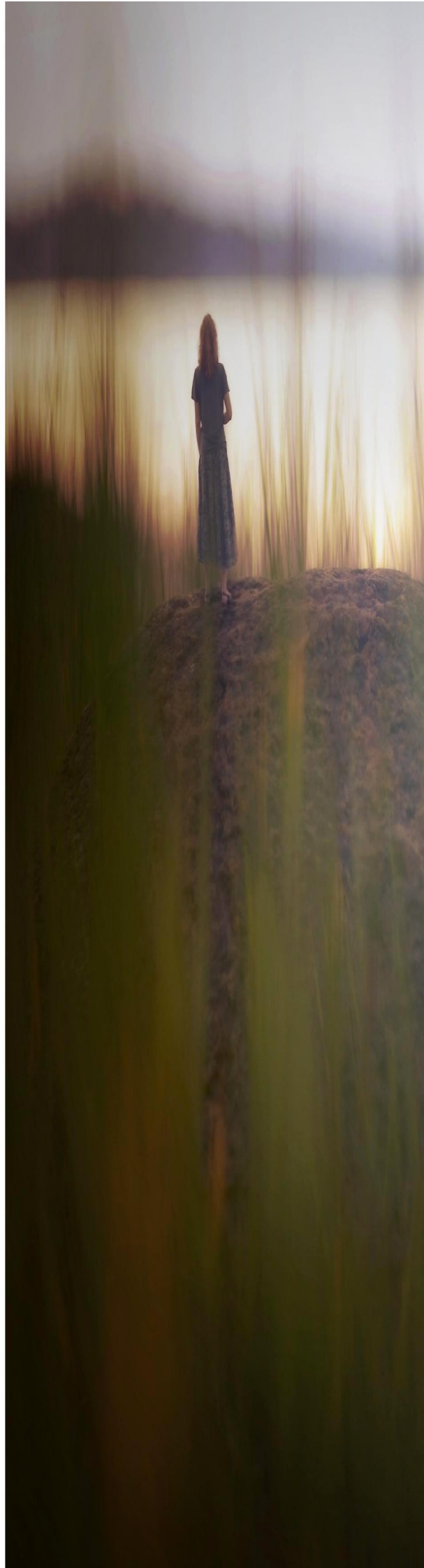
सिला -ए -गम

ज़िन्दगी के दरमियाँ कुछ लम्हें यूँ भी,

कुछ गैर तुम, कुछ गैर हम भी,

आईना पूछे अब के सिला -ए -गम क्या होगा,

कुछ नाउम्मीद तुम, कुछ नाउम्मीद हम भी,

दिलों के दरमियाँ अब सहारा क्या हो,

कुछ बर्बाद तुम, कुछ बर्बाद हम भी,

शहर ये के शहर वो, जाएँ कहाँ क्या पता,

कुछ लापता तुम, कुछ लापता हम भी ………

तेरा ख़्याल

इश्क़ की साज़िशों में न डूबे ही गए,

न पार आए .....,

हालात फिर भी इसकदर, के,

साँस लूँ और तेरा ख़्याल आए,

भुला के दर्द कोई जिया है कब,

हालात इस कदर के होश लूँ और तेरा ख़्वाब आए ....

फलसफा

अरमां, ख़्वाब, चाहतों के दौर,

सब ग़फ़लत की मौज,

इश्क़, मोहोब्बत, इज़हार के तौर,

सब शर्त -ओ - आज़माइश के ज़ोर,

मोड़ पे किसी, बदले हुए नज़ारे की ओस,

और रह -गुज़र को फलसफा इतना,

के,

मैं भी वही -तुम भी वही,

फिर भी अंजनियों के बिखरे कई अलफ़ाज़ -ए-सोज़ ....

इलज़ाम

एक ख़्वाब को, ज़िन्दगी के माथे पर सिलवटें कितनी,

ता -उम्र के लिहाज़ पर कोई क्या -क्या वारे ………

आदत में आ चुका है उनकी इलज़ाम करना,

शहादत के लिहाज़ पर कोई क्या -क्या हरे …………

आरज़ू

उल्फ़त -ए-हयात पर अब उम्दा

उल्फ़त -ए-हयात पर अब उम्दा गुज़रे और क्या,

वो जिसकी आरज़ू में जले धुंआ-धुंआ,

काफिर मेरे हासिल को रास आया कहाँ.........

महरूम

तेरी आदत से ख़ुदको महरूम करने के सितम में,

तेरी आरज़ू से ख़ुदको बद्सलूख करने के सितम में,

तुम, तुम न रहे, हम, हम न रहे,

तेरे वजूद से ख़ुदको को फर्क करने के सितम में……

अपना ज़माना

दिल की आरज़ू से बाँध कर नाम तेरा,

दिल की तन्हाई को आबाद रखा हमनें,

तुझे बेगुनाह करके आज़ाद रखा हमनें,

ख़ुद पे करके इलज़ाम सब……

अपना ज़माना बर्बाद रखा हमनें………

सरमाया

तू मेरा रास्ता भी नहीं,

तू मेरे वास्ते भी नहीं,

तू मेरा साया भी नहीं,

तू मेरा सरमाया भी नहीं,

दिल की आरज़ू में उलझा हुआ कोई सवाल जैसे,

ज़ाहिर है तू, मगर मेरा मायने भी नहीं,

इक तुझे पाने का ख्वाब, और हकीक़त को मंज़ूर भी नहीं,

तसव्वुर को यूँ तो तेरी यादों से रक्स है बहुत,

पूछो तो तेरी ख्वाइश, मगर तकदीर पर आखिर ऐतबार भी नहीं.......

आसमां

रूह पर साया सा ,

वक़्त की सिलवटों में लिपटी मेरी ही काया सा,

ये इश्क़ का लिबास फैला है रूह तक गहरा जो,

है कैसी नज़रों की माया सा,

परिंदा अब आसमां के ख्वाब करे,

पाँव ज़मीन पर टिकाए, मुट्ठी में बादल रखे,

ज़िन्दगी को बहाना सा ,

आरज़ू में नरम इक ख्याल सा ,

ये इश्क़ का लिबास सा ………

MOPH